VAJIRAO & REDDY INSTITUTE
India's Top Potential Training Institute for IAS
+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS
(योजना पत्रिका विश्लेषण)
(स्वतंत्रता की अनकही कहानियां)
(August 2024)
(Part II)

TOPICS TO BE COVERED

- गुजरात से आजादी के बांके रखवाले
- जंबूद्वीप उद्घोषणा
- के. केलप्पन: केरल के गांधी

ADDRESS:
19/1A Shakti Nagar, Nagiya Park Near Delhi University, New Delhi - 110007 (India)

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

गुजरात से आजादी के बांके रखवाले:

ओखा मंडल के वाघेर योद्धा: 1857 के विद्रोह में गुजरात के गुमनाम नायक

- ओखा मंडल के वाघेर योद्धा 1857 के विद्रोह में ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रतिरोध के अवतार थे।
- उल्लेखनीय है कि प्रसिद्ध बंदरगाह और तीर्थ स्थल 'द्वारका' में देशभर के सैलानी और तीर्थयात्री आते थे। 1816 में 'बेट द्वारका' पर ईस्ट इंडिया कंपनी के कब्ज़ा कर लिया था।

- 1857 के विद्रोह की भावना से प्रेरित होकर मुलु मानेक और जोधा मानेक के नेतृत्व में वाघेरों ने ओखा से ब्रिटिश शासन को खदेड़ दिया। मार्च 1858 तक वे बेट द्वारका किले में पहुँच गये थे। जोधा मानेक द्वारका के राजा बन गए और जुलाई 1859 तक अंग्रेजों द्वारा पुनः कब्ज़ा किये जाने तक राजा बने रहे।
- उल्लेखनीय है कि मुलु मानेक और जोधा मानेक, सौराष्ट्र के महानायक माने जाते हैं।

रणछोड़ लाल छोटे लाल: आर्थिक स्वतंत्रता की कहानी

- स्वतंत्रता संग्राम में शासकों से सीधे टकराव को महत्व दिया जाता है, लेकिन दमन के विरुद्ध संघर्ष में आर्थिक सशक्तिकरण की भी उतनी ही भूमिका होती है।
- उल्लेखनीय है कि ब्रिटिश सत्ता भारत में औपनिवेशिक सत्ता थी जो मुख्यतया आर्थिक संसाधनों के शोषण के उद्देश्य से भारत में स्थापित थी। अपने इस उद्देश्यों के पूर्ति में इसने भारतीय ग्रामीण एवं शिल्प अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से चौपट कर दिया था।
- गुजरात ऐतिहासिक काल से ही उद्यमशील रहा है और रणछोड़लाल छोटे लाल के नेतृत्व में राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता को गति और बढ़ावा मिला था।
- 1850 में मात्र 27 साल की उम्र में उन्होंने अहमदाबाद में मिल लगाने का प्रयास किया था। उन्होंने अहमदाबाद में अपनी कताई मिल खोली, और चुनौतियों से लड़ते हुए भी 1859 में स्वयं की “अहमदाबाद स्पिनिंग एंड वीविंग कंपनी लिमिटेड” बनाने में वह कामयाब हो गए।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- अहमदाबाद नगर की कपड़ा मिलों ने बहुत तरक्की की और 1916 तक वहां 62 मिले काम करने लगी थी, जिसकी वजह से अहमदाबाद को "मैनचेस्टर ऑफ ईस्ट" कहा जाने लगा था।
- रणछोड़ लाल के दूरदर्शिता के बल पर ही, बाद में अहमदाबाद गांधी युग में मुख्य प्रेरणा स्रोत बन सका।

मानगढ़ नरसंहार की अनकही कहानी:

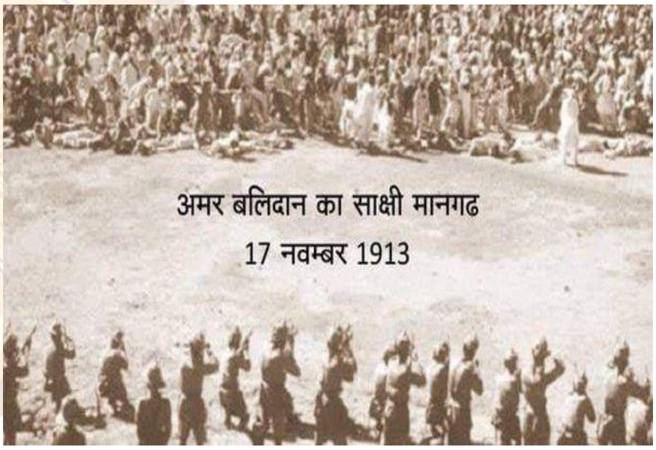

- 20वीं शताब्दी के शुरुआती वर्षों में ब्रिटिश अधिकारियों ने भारत भर में उठ रहे विद्रोह को क्रूरतापूर्ण तरीकों से दबा दिया था।
- उल्लेखनीय की दक्षिणी राजस्थान और उत्तरी गुजरात में स्थानीय शासकों और प्रशासन के खिलाफ आदिवासियों को एकजुट करने में 'गोविंद गुरु' ने अथक प्रयास किए थे। ब्रिटिश सेना की ताकत को चुनौती देने के उद्देश्य से गोविंद गुरु के नेतृत्व में 17 नवंबर 1913 को मानगढ़ पहाड़ी पर भील लोग एकत्र हो गए थे। बंदूकों से लैस ब्रिटिश सेना ने बड़ी बेरहमी के साथ करीब 1500 से अधिक निर्दोष आदिवासियों को गोलियों से भून दिया था।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

लोगों की भावनाएं समझने वाले झावेरचंद मेघाणी:

- गुजरात में चोटिला में 1896 में जन्मे झवेरचंद मेघाणी को महात्मा गांधी ने 'राष्ट्रीय शायर' का नाम दिया था। युवावस्था में ही वे एक गुजराती अखबार में संपादक बन गए थे और गांधी जी के सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान में बहुत सक्रिय रहे।
- उनकी शायरी के संग्रह 'सिंधुवाड़ो' में साहस और बहादुरी के विषय पर पूरा जोर दिया गया है। दूसरे गोलमेज सम्मेलन के लिए गांधीजी की विवादास्पद लंदन यात्रा के समय मेघाणी ने 'छेल्लो कटोरो (जहर का आखिरी घूंट)' शीर्षक कविता लिखकर गांधीजी के भाव को उजागर किया था। उल्लेखनीय है कि गांधी जी के निजी सहायक महादेव देसाई के अनुसार गांधी जी ने कहा था कि मेघाणी ने अपनी कविता में उनकी विचारधारा को चित्रित किया है।
- भारत के स्वाधीनता संग्राम के दौरान मेघाणी का साहित्यिक योगदान अमूल्य था। उन्होंने न केवल लोगों को संघर्ष और अभिलाषाओं को उकेरा बल्कि भावी पीढ़ियों तक गुजरात की समृद्ध लोक परंपरा को सुरक्षित पहुंचाया।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

वसंत और रजाब की कहानी:

- 1946 में ब्रिटेन की 'फूट डालो और राज करो' नीति के कारण भारत में सांप्रदायिक सद्भाव गंभीर खतरे में पड़ गया था। 1 जुलाई 1946 को अहमदाबाद में रथ यात्रा के दौरान फैले दंगे से नगर में अराजकता का माहौल पैदा हो गया था।
- इसी उथल-पुथल के बीच दो युवा मित्र, वसंत राव हेगिस्ते और रजाब अली लखानी, ने लोगों की जान बचाने के लिए पूरी बहादुरी से काम किया। बढ़ती हिंसा के बावजूद वसंत और रजाब की युवा जोड़ी ने बेख़ौफ़ होकर दंगाइयों के सामने डटकर उन्हें अपनी कार्रवाई रोकने को कहा।
- उनकी साहसपूर्ण आग्रह का ही नतीजा था कि एक मुस्लिम ड्राइवर को हिंदू भीड़ से और एक हिंदू व्यापारी को मुस्लिम भीड़ के चंगुल से बचाया गया था उन दोनों के प्रयासों से दंगे कुछ समय के लिए थम गए।

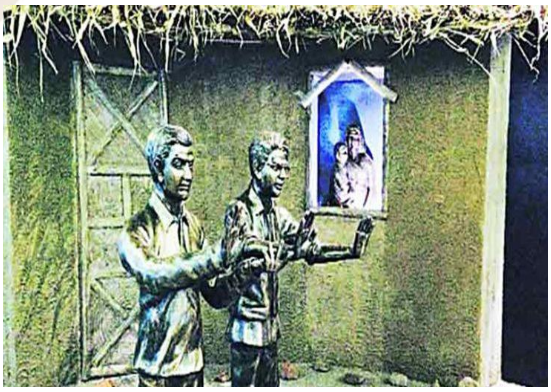

- उल्लेखनीय है कि अहमदाबाद में जमालपुर में कुछ परिवारों को हिंसक भीड़ से बचने के लिए, बेकाबू भीड़ के सामने वसंत और रजाब सड़क पर लेट गए। पर भीड़

ने पूरी निर्मोता के साथ उन परिवारों की हत्या कर दी और दोनों युवक भी शहीद हो गए।

- अहमदाबाद आज भी उनके बलिदान का सम्मान करता है और घृणा और हिंसा के माहौल में उनके साहस और एकता को आदरपूर्वक याद करता है।

साहस की प्रतिमूर्ति हंसा मेहता:

- हंसा मेहता का जन्म 1897 में सूरत में हुआ था और उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों के अनदेखी करते हुए दर्शन शास्त्र में स्नातक उपाधि अर्जित की थी। 1930 में हंसा मेहता ने महिलाओं से स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने की अपील की थी।

- 1947 में संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग के ऐतिहासिक सम्मेलन में शामिल हुई दो महिलाओं में हंसा मेहता भी थी। उन्होंने मानवाधिकार की वैश्विक घोषणा की समग्र भाषा के लिए जोरदार वकालत थी। उन्होंने “सभी पुरुष स्वतंत्र और समान पैदा होते हैं” के विरोध में जोरदार तर्क रखते हुए और ‘पुरुष’ शब्द की जगह ‘मानव’ शब्द रखने का प्रस्ताव रखा और स्त्री-पुरुष के भेद से रहित भाषा अपनाने पर बल दिया।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- भारतीय संविधान सभा के 15 महिला प्रतिनिधियों में शामिल हंसा मेहता ने मुख्य भूमिका निभाई थी और 15 अगस्त 1947 को राष्ट्रीय ध्वज को सांकेतिक रूप से प्रस्तुत किया था। उन्होंने संविधान सभा में 'समान नागरिक संहिता' और स्त्री-पुरुष समानता जैसे अहम मुद्दों पर आवाज बुलंद की और महिला सशक्तिकरण की दिशा में अग्रणी प्रयासों की परंपरा बरकरार रखी।

जंबूद्वीप उद्घोषणा:

परिचय:

- अंग्रेज भारत में केवल व्यापार करने के लिए आए थे, लेकिन हथियारों पर उनका वर्चस्व, भारतीयों को एक-दूसरे के खिलाफ करना, चाहे वह आर्थिक कारणों से हो, जातिगत कारणों से हो, अपने उद्देश्यों के लिए उन्हें गुलाम बनाना हो, ये सब भारतीयों के पतन का कारण बने।

- अंग्रेजों के अत्याचारों के खिलाफ सबसे पहले उद्घोषणा दक्षिण भारत के शिवगंगई हिस्से पर शासन करने वाले मरुधु भाइयों ने उठाई थी। यह आर्कोट के नवाब मोहम्मद अली के कारण था, जिन्होंने करों के संग्रह, शासन के अधिकार अंग्रेजों को सौंप दिए, जिसके कारण अंततः अंग्रेजों ने भारतीयों के साथ कुत्तों जैसा व्यवहार करना शुरू कर दिया।
- यह 1807 में वेल्लोर विद्रोह और 1857 में सिपाही विद्रोह से भी पहले की बात है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

1801 की जंबूद्वीप उद्घोषणा:

- यह वह समय था जब मरुधु भाइयों ने जम्बू द्वीप प्रकटनम नामक एक घोषणा जारी करके अपने संघर्ष को एक नई ऊंचाई पर पहुंचा दिया।
- 16 जून, 1801 को, छोटे मरुधु (चिन्ना मरुधु) ने तिरुचिरापल्ली किले और श्रीरंगम मंदिर की दीवारों पर एक पोस्टर चिपकाया, जिसमें मुसलमानों सहित समाज के सभी वर्गों को दमनकारी यूरोपीय शासकों के खिलाफ विद्रोह करने के लिए एक साथ आने का आह्वान किया गया था।
- 1801 के उद्घोषणा में, मारुथु भाइयों ने कहा, *"अपने धर्म का उल्लंघन करने वाले यूरोपीय लोगों ने धोखे से राज्य को अपना बना लिया है और निवासियों को कुत्ते समझकर उन पर अधिकार जताते हैं"*।
- आर्कोट के नवाब का उदाहरण देते हुए, इसमें कहा गया कि ईस्ट इंडिया कंपनी के शासकों के साथ समझौता करके कुछ रियासतों ने न केवल अपना क्षेत्र खो दिया, बल्कि अपने लोगों को भी अवर्णनीय अनुपात में गरीबी में धकेल दिया।
- इसलिए, उद्घोषणा ने स्पष्ट रूप से सभी को सलाह दी कि वे हर तरह से दुष्ट-मन वाले नीच विदेशियों (सभी यूरोपीय शक्तियों) से दूर रहें।

जम्बूद्वीप उद्घोषणा की खास बात क्या थी?

- उल्लेखनीय है कि 18वीं शताब्दी में भारत को एक राष्ट्र के रूप में नहीं जाना जाता था। उस समय भारत में म्यांमार, बांग्लादेश, पाकिस्तान, श्रीलंका और अफगानिस्तान के कुछ से शामिल थे। इस उद्घोषणा में जम्बूद्वीप (भारतीय प्रायद्वीप) में रहने वाले सभी लोगों से आवाहन किया गया।
- चिन्ना मरुधु पंडियार को यह भी पता था कि भारत के तात्कालिक शासक अर्थात ब्रिटिश, डच, पुर्तगाली और फ्रांसीसी सभी को यूरोपीय लोगों के रूप में एक ही श्रेणी में रखा जा सकता है। 1801 युद्ध के समय, भारतीय शासकों के समान प्रथा के विपरीत चिन्ना मरुधु पंडियार ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ पुर्तगाली, डच और फ्रांसीसियों की मदद लेने से इनकार कर दिया, क्योंकि वह हर यूरोपीय को बुरा मानते थे।
- जम्बूद्वीप उद्घोषणा ने स्पष्ट रूप से मरुधु भाइयों की तत्कालीन मौजूदा स्थिति, इस तरह के दुख के कारणों और इस पीड़ादायक बीमारी से बाहर निकलने के लिए आगे की कार्रवाई के रोडमैप की समझ को स्थापित किया।

- ध्यान देने वाली बात यह है कि मरुधु भाइयों ने वास्तव में आम आदमी के साथ अपनी सहानुभूति व्यक्त की। इसने एकता की आवश्यकता को रेखांकित किया।। यह वास्तव में एक लंबे और निरंतर स्वतंत्रता संग्राम के लिए एक भव्य दृष्टि कथन था।
- उल्लेखनीय है कि मरुधु पंडियार अपने समय से बहुत आगे थे उन्होंने जो कुछ भी घोषणा में बताया वह तब सफल नहीं हुआ, लेकिन 56 साल बाद यह सिपाही विद्रोह के माध्यम से साकार हुआ। दिलचस्प बात यह है कि विद्रोह की शुरुआत मेरठ जम्बूद्वीप से ही हुई थी।

घोषणापत्र के बाद का प्रभाव:

- हालाँकि विभिन्न पोलिगर स्थानीय स्तर के गठबंधनों के तहत एक साथ आए थे जैसे कि तिरुनेल्ली/डिंडीगुल/रामनाद लीग या कोयंबटूर प्रमुख कन्नड़ शासकों के साथ, उन पहलों को सक्रिय समर्थन और विशेष रूप से जम्बूद्वीप उद्घोषणा के बाद और बढ़ावा मिला।
- 1801-1806 की अवधि में रामनाद के दक्षिणी तटीय शहरों से लेकर धारवाड़ के पश्चिमी तट तक बार-बार और लगातार उथल-पुथल देखी गई और यह सिंधिया के क्षेत्र (वर्तमान मध्य प्रदेश) के करीब पहुंच गई।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

- कलयारकोइल में शिव मंदिर को विस्फोट से बचाने के लिए मारुथु भाइयों द्वारा आत्मसमर्पण करने के बाद भी ये संघर्ष लगातार जारी रहे। उन्हें कट्टाबोमन की तरह सार्वजनिक रूप से फांसी पर लटका दिया गया। मारुथु भाइयों के रिश्तेदारों और विद्रोहियों से जुड़े सभी लोगों को शिकार बनाया गया, काटा गया, अपंग बनाया गया और समुद्र के पार मलेशिया तक भेज दिया गया।
- यही कारण है कि कई इतिहासकार 1801 के जम्बूद्वीप उद्घोषणा और उसके दौरान हुए विद्रोहों को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम मानते हैं, जो 1857 से आधी सदी पहले हुआ था।

के. केलप्पन: केरल के गांधी

परिचय:

- के. केलप्पन जिन्हें केरल के गांधी के नाम से जाना जाता है, एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता, प्रशासक, शिक्षाविद, संपादक और समाज सुधारक थे।
- स्वतंत्रता और समानता की लड़ाई में उनके अथक प्रयास ने केरल के इतिहास पर व्यापक भारतीय आख्यान पर एक अमिट छाप छोड़ी है।

- वे केरल से महात्मा गांधी के व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन में शामिल होने वाले पहले सत्याग्रही थे। उन्होंने एक तरफ सामाजिक परिवर्तन के लिए और दूसरी तरफ अंग्रेजों के खिलाफ अथक संघर्ष किया था।

एक क्रांतिकारी का विकास:

- कोयापल्ली केलप्पन नायर (के. केलप्पन) का जन्म 24 अगस्त 1889 को केरल की कोझिकोड जिले में हुआ था। मद्रास विश्वविद्यालय से स्नातक करने से पहले उन्होंने कोझिकोड और चेन्नई में अध्ययन किया। उन्होंने चंगानासेरी के सेंट

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

बर्चमैन हाई स्कूल में शिक्षक के रूप में अपना करियर शुरू किया। 1920 में समाज द्वारा संचालित एक स्कूल के प्रिंसिपल बन गए।

- उसके बाद उन्होंने बॉम्बे में लॉ स्कूल में दाखिला लिया, लेकिन जब महात्मा गांधी ने अंग्रेजों के बहिष्कार के अपील की तो उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ दी और असहयोग आंदोलन में शामिल हो गए और अपना जीवन मातृभूमि की सेवा में समर्पित कर दिया।
- एक अन्य गांधीवादी नेता के. कुमार के साथ केलप्पन केरल में अपने नाम से जाति को दर्शाने वाला प्रत्यय (नायर) हटाने वाले सबसे पहले व्यक्ति बन गए। उन्होंने अस्पृश्यता को खत्म करने और हरिजनों को सशक्त बनाने के लिए अथक प्रयास किया और पूरे केरल में कई हरिजन छात्रावास और स्कूल स्थापित किये।
- उन्होंने कभी सत्ता या पद की आकांक्षा नहीं की और उनका पूरा जीवन राष्ट्र के प्रति निस्वार्थ सेवा की गाथा है। 6 अक्टूबर, 1971 को उनका निधन हो गया।

केरल में नमक मार्च:

- गांधी जी द्वारा प्रेरित नमक सत्याग्रह का केरल पर अपना ही प्रभाव था। मालाबार का पयन्नूर केरल में सत्याग्रह का मुख्य स्थल था।

- जब गांधी जी ने दांडी मार्च की घोषणा की तब पीएससी ने केरल गांधी के नेतृत्व में मालाबार में नमक मार्च और शिविर शुरू किया। उन्होंने मालाबार और त्रावणकोर-कोचीन में आम जनता के बीच एकजुटता की भावना को भी बढ़ावा दिया।
- 6 अप्रैल 1930 को जब गांधी जी ने नमक नियमों का उल्लंघन किया तो उस दिन केरल में राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाया गया। 21 अप्रैल 1930 को केलप्पन के नेतृत्व में कोझिकोड के 32 स्वयंसेवक पयन्नूर पहुंचे और समुद्र तट पर नमक कानून तोड़ा। शुरू में अंग्रेजों ने इस आंदोलन को नजरअंदाज कर दिया। लेकिन 5 मई को गांधी जी की गिरफ्तारी के बाद सरकार ने आंदोलन को दबाने का प्रयास किया और केलप्पन को गिरफ्तार कर लिया गया और शिविर पर छापा मारा गया।
- 4 मार्च 1931 को गांधी इरविन समझौते के साथ यह आंदोलन समाप्त हुआ।

के. केलप्पन केरल के प्रथम सत्याग्रही:

- के. केलप्पन को महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने के लिए केरल से पहले सत्याग्रही के रूप में चुना गया था। उल्लेखनीय है कि ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार ने भारतीय लोगों की सहमत के बिना, भारत

को द्वितीय विश्व युद्ध में झोंक दिया था। विदेशी सरकार के इस फैसले का विरोध करने के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू करने का फैसला किया था।

- इस फैसले के पीछे उनके समर्थकों और पार्टी संगठन को आगे होने वाले जन आंदोलन के लिए तैयार करने की रणनीति थी।

वैकोम और गुरुवायूर सत्याग्रह के नायक:

- केलप्पन 1925 में प्रसिद्ध वैकोम सत्याग्रह और 1932 में गुरुवायूर सत्याग्रह के प्रमुख व्यक्ति थे। दोनों ही सत्याग्रहों में अछूतों के लिए मंदिर प्रवेश के अधिकार की मांग की गई थी।

वैकोम सत्याग्रह:

- वैकोम सत्याग्रह, भारत में संभवतः अछूत प्रथा को समाप्त करने का पहला महत्वपूर्ण प्रयास था, जिसमें अछूतों के लिए मंदिर प्रवेश की मांग की गई थी।
- संघर्ष लगभग 20 महीने तक चला। सत्याग्रहियों की मांग सिर्फ यह थी कि अवर्णों को मंदिरों के आसपास के सार्वजनिक मार्ग से गुजरने का अधिकार दिया जाए।
- गांधी जी मार्च 1925 में वैकोम पहुंचे विभिन्न जाति समूह नेताओं के साथ कई चर्चा की और महारानी रीजेंट से मिले।

- हालांकि सत्याग्रह का घोषित उद्देश्य पूरी तरह से पूरा नहीं हुआ था लेकिन इस आंदोलन ने राज्य में मंदिर में प्रवेश के पक्ष में जनमत को प्रभावित करने में मदद की थी। 1928 तक पूरे त्रवनकोर में सभी मंदिरों तक पहुंचने के रास्ते सभी हिंदुओं के लिए खोल दिए गए थे।

गुरुवायूर सत्याग्रह:

- केलप्पन द्वारा शुरू किए गए अस्पृश्यता के खिलाफ ठोस संघर्षों के इतिहास में गुरुवायूर सत्याग्रह एक और महत्वपूर्ण मोड़ था।
- 13 सितंबर 1932 को यह नया मोड़ लिया, जब गांधी जी ने भारत में अनुसूचित जातियों के लिए एक अलग निर्वाचिका रखने के सरकार के फैसले के विरोध में, 21 सितंबर को 'आमरण अनशन' शुरू करने की घोषणा की।
- केलप्पन ने इसे मंदिर प्रवेश आंदोलन की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करने का सबसे उपयुक्त क्षण माना और 18 सितंबर 1932 को उन्होंने अस्पृश्यता समाप्त होने तक गुरुवायुर मंदिर के सामने आमरण अनशन करने की अपने निर्णय की घोषणा की। केलप्पन की 12 दिवस की हड़ताल ने श्री गुरुवायूर मंदिर को सभी जातियों के हिंदू भक्तों के लिए खोल दिया गया।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

एक दूरदर्शी व्यक्ति:

- के. केलप्पन एक महान दूरदर्शी थे जिन्होंने ग्रामीण विकास और इंजीनियरिंग, सार्वजनिक स्वास्थ्य, कृषि और मानविकी में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार के सहयोग से एक ग्रामीण संस्थान की शुरुआत की।
- इसकी स्थापना 1963 की हुई थी और 1976 में इसका नाम बदलकर केरल सरकार के अधीन कल्लपाजी कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग और टेक्नोलॉजी कर दिया गया था। केरल राज्य का यह एकमात्र कृषि इंजीनियरिंग महाविद्यालय है।